केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मैसूरू

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRINING
MYSURU

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह - 2025

ONE-DAY PRESENTATION ON

INCLUSIVE EDUCATION, CwSN AND EQUITABLE TEACHING

प्रिय शिक्षकों,

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु की ओर से "समावेशी शिक्षा, CwSN (Children with Special Needs) और न्यायसंगत शिक्षण पर एक दिवसीय प्रस्तुतिकरण" के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

समावेशी शिक्षा केवल एक शैक्षणिक अवधारणा नहीं, बल्कि यह हमारे मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रतिबिंब है। प्रत्येक बालक अपने भीतर अपार संभावनाएँ लेकर जन्म लेता है — आवश्यकता है तो बस उन संभावनाओं को पहचानने और उन्हें सही दिशा देने की। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि हर शिक्षार्थी को आत्मविश्वास, स्वाभिमान और गरिमा के साथ आगे बढ़ने का अवसर देना भी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का मूल दर्शन भी यही है — *"Education for All, with Equity and Inclusion."* इस नीति ने शिक्षा को अधिक न्यायसंगत, लचीला और बहुआयामी बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। हमारे शिक्षक इस परिवर्तन के अग्रदूत हैं, जो अपनी संवेदनशीलता, सृजनशीलता और समर्पण से प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

यह प्रस्तुति इस तथ्य का जीवंत उदाहरण है कि जब हम शिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और कक्षा के वातावरण को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार ढालते हैं, तो हर बच्चा अपनी विशिष्टता में चमक उठता है।

मुझे विश्वास है कि यह कार्यक्रम सभी प्रतिभागी शिक्षकों को प्रेरित करेगा कि वे अपने विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों को व्यवहार में लाएँ और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी बालक पीछे न रह जाए।

आप सभी को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रतिवेदन: दिवस की कार्यवाही (06.10.2025)
"समावेशन का उत्सव: सीखने और विकास का एक दिन"

उद्घाटन केन्द्रीय विद्यालय संगठन, ज़ीएट मैसूर में वार्षिक प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह के एक महत्त्वपूर्णअंग के रूप में समावेशी शिक्षा, न्यायसंगत शिक्षण, CwSN (विशेष आवश्यकता वाले बच्चे) और मानसिक कल्याण के प्रतिप्रतिबद्धता प्रमुखता से केंद्र में रही। यह आयोजन औपचारिक रूप से 06 अक्टूबर, 2025 को एक प्रेरणादायक उद्घाटन के साथ शुरू हुआ। प्रशिक्षण सहयोगी (भौतिकी) और समन्वयक, श्री दिनेश कुमार ने सभी प्रस्तुतकर्ताओं का स्वागत किया और साझा ज्ञान के महत्व को रेखांकित किया। प्रतिभागियों के आत्म-परिचय के बाद, सम्मानित उपायुक्त एवं संस्था निदेशक, सुश्री मीनाक्षी जैन ने अवसर की शोभा बढ़ाई, इन महत्वपूर्णविषयों के प्रतिसंस्थान की प्रतिबद्धता को स्थापित किया। अपने मुख्य भाषण में, उन्होंने स्पष्ट रूप से इस अनिवार्यता को रेखांकित किया कि प्रत्येक शिक्षक को केवल एक प्रशिक्षक से ऊपर उठकर, सीखने का एक प्रेरणादायक सूत्रधार और पहुँच का एक दयालु समर्थक बनना होगा। यह दोहरी, आवश्यक भूमिका ही प्रत्येक कक्षा के भीतर सच्चे, हृदयस्पर्शी समावेशन को प्राप्त करने का मूल आधार है।

विशेषज्ञता का संगम : इस विशेष एक-दिवसीय प्रस्तुति ने विभिन्न फीडर क्षेत्रों के समर्पित शिक्षकों के एक विविध समूह को एक साथ लाया। एर्नाकुलम और हैदराबाद का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभागी यहाँ सर्वोत्तम अभ्यासों और अभिनव रणनीतियों के आदान-प्रदान के लिए उत्सुक थे। सत्र में उत्कृष्ट परियोजना प्रस्तुतियों को शामिल किया गया, जिसने क्षेत्र में समावेशी सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया। प्रस्तुतकर्ताओं में शामिल थे:

1. श्रीमती स्मिता, प्रधानाध्यापिका, पीएम श्री केवि पय्यानूर, एर्नाकुलम क्षेत्र, जिन्होंने अपने दूरदर्शी कार्य को साझा किया। उनकी परियोजना ने जमीनी स्तर पर समावेशन के लिए एक खाका (blueprint) प्रदान किया, यह सिद्ध करते हुए कि प्राथमिक कक्षा से ही समानता और उत्कृष्टता एक साथ प्राप्त की जा सकती है।

2. श्री भुवनेश, पीआरटी, पीएम श्री केवि -2 बेलगावी कैंट, बैंगलोर क्षेत्र, जिन्होंने प्राथमिक स्तर की प्रभावशाली पहलों का प्रदर्शन किया।

3. सुश्री प्रगति प्रजापति, पीआरटी, पीएम श्री केवि वाल्टेयर, हैदराबाद क्षेत्र, जिन्होंने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CwSN) के लिए सीखने के अनुभव को समृद्ध करने के उद्देश्य से अभिनव परियोजनाओं का विस्तार से वर्णन किया। "प्रत्येक प्रस्तुति के बाद, एक प्रतिष्ठित पैनल—निदेशक महोदया, विशेष आमंत्रित सदस्य (स्नातकोत्तर शिक्षक) मैडम ज्योति, और प्रशिक्षण सहयोगी श्री दिनेश कुमार —ने विचारोत्तेजक और गहन प्रश्न प्रस्तुत किए, जिन्होंने अपने सामूहिक ज्ञान से चर्चा को और गहरा किया और सत्रों को समृद्ध किया।" यह दिन सामूहिक प्रयासों का एक शक्तिशाली प्रमाण था, जो यह सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे हैं कि प्रत्येक छात्र को समानता और कल्याण के वातावरण में समर्थन, पहचान मिले और वह प्रगति करने के लिए सशक्त हो।

विषय: समावेशी शिक्षा – विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर केंद्रित

प्रस्तुतकर्ता: सुश्री प्रगति प्रजापति (पी.आर.टी.)
विद्यालय: पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, वाल्टेयर
क्षेत्र: हैदराबाद

सारांश:
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, वाल्टेयर में समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिससे *विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN)* के लिए ऐसा शिक्षण वातावरण तैयार किया जा सके, जहाँ हर बच्चा अपनेपन और सम्मान के साथ सीख सके। यह पहल विशेष रूप से उन बच्चों से प्रेरित है जो अपनी विशिष्ट क्षमताओं और जीवन अनुभवों से सबको सीखने की प्रेरणा देते हैं।

उद्देश्य:

- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान और आकलन करना।
- विशेष आवश्यकताओं या विकास संबंधी विलंब की शीघ्र पहचान के लिए PRASHAST ऐप का उपयोग करना।
- व्यक्तिगत सहायता, उपयुक्त हस्तक्षेप और आगे के आकलन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना ताकि समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा दिया जा सके।
- व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ (IEP) तैयार करना, जिससे प्रत्येक छात्र की आवश्यकता के अनुसार सीखने की रणनीति अपनाई जा सके।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और खेल:
फिंगर पेंटिंग, मिट्टी के खिलौने बनाना, रंगोली, संगीत-चिकित्सा, योग और संशोधित खेल (जैसे सॉफ्ट बॉल क्रिकेट, सीटेड वॉलीबॉल) का आयोजन किया गया।
छात्रों ने क्षेत्रीय बास्केटबॉल प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

मान्यता:
"इन्क्लूसिव स्टार ऑफ द मंथ" पुरस्कार विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की प्रतिभा, प्रयास और प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है। उनकी उपलब्धियाँ "इन्क्लूजन वॉल" पर प्रदर्शित की जाती हैं।

चिकित्सीय गतिविधियाँ:
चित्रकारी, स्पीच थेरेपी, थेरेपी बॉल, ट्रैम्पोलिन, पैडल साइकिल और आँख-हाथ समन्वय खेल शामिल हैं।

व्यक्तिगत सहयोग:
शिक्षक कक्षा और अवकाश के समय व्यक्तिगत ध्यान और सहायता प्रदान करते हैं।

शैक्षणिक भ्रमण:
सामाजिक सहभागिता, पर्यावरण जागरूकता और व्यावहारिक शिक्षण के उद्देश्य से आयोजित किए जाते हैं।

परामर्श:
मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और लचीलापन बढ़ाने हेतु काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाते हैं।

संकेत भाषा (Sign Language):
संचार कौशल विकसित करने हेतु सिखाई जाती है।

प्रभाव:
इन प्रयासों से यह सुनिश्चित किया गया है कि विशेष आवश्यकता वाले छात्र भले ही अलग तरह से सीखते हों, लेकिन उनके सपने समान होते हैं। वे कक्षा और समाज दोनों में अपनी विशेष पहचान और स्थान बना रहे हैं।

विषय: समावेशी शिक्षा – विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अपनाई गई रणनीतियाँ
प्रस्तुतकर्ता: श्री भुवनेश (पी.आर.टी.)
विद्यालय: पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. 2, बेलगाम कैंट
क्षेत्र: बेंगलुरु

सारांश:
यह प्रस्तुति समावेशी शिक्षा और *ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)* से पीड़ित एक बच्चे के विकासात्मक प्रगति पर केंद्रित है। मुख्य उद्देश्य है – ऐसी प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ और सृजनात्मक गतिविधियाँ साझा करना जो मुख्यधारा की कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को सहयोग प्रदान करती हैं।

सारांश/अवलोकन:
समावेशी शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि सभी बच्चे, उनकी क्षमता चाहे जैसी भी हो, एक ही कक्षा में साथ सीखें। जिस बच्चे पर यह अध्ययन आधारित है, उसे संचार, भाषा-प्रसंस्करण और सामाजिक संपर्क में कठिनाइयाँ हैं। निरंतर सहायता, शिक्षकों और विशेष शिक्षकों के सहयोग तथा व्यक्तिगत रणनीतियों के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति प्राप्त हुई है।

प्रमुख रणनीतियाँ:

- चरणबद्ध निर्देश देना और बार-बार प्रदर्शन कराना।
- दृश्य सहायक सामग्री, संकेत और सरल भाषा का उपयोग करना।
- अतिरिक्त समय और एक-से-एक सहायता प्रदान करना।
- समूह गतिविधियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करना और सकारात्मक सुदृढीकरण देना।
- प्रशंसा, पुरस्कार और प्रेरणा द्वारा आत्मविश्वास विकसित करना।

सृजनात्मक और आकर्षक गतिविधियाँ:
चित्रकला, संगीत और नृत्य, दृश्यात्मक कहानी सुनाना, संवेदी खेल, पहेलियाँ और भूमिका-निभाने जैसी गतिविधियों से बच्चे के मोटर कौशल, भाषा और सामाजिक कौशल विकसित किए गए।

प्रगति:
अब बच्चा शब्दों और सरल वाक्यों को पहचानता है, बुनियादी गणितीय समस्याएँ हल करता है और सामाजिक व्यवहार में सुधार दिखा रहा है। संचार कौशल में वृद्धि हुई है और कक्षा में भागीदारी अधिक सक्रिय एवं आत्मविश्वासपूर्ण हो गई है।

निष्कर्ष एवं आगे की दिशा:
यह समावेशी दृष्टिकोण सकारात्मक परिणाम दर्शाता है। यह निरंतर अभिभावक सहयोग, संरचित समर्थन और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसरों के महत्व को रेखांकित करता है। आगे ध्यान भाषा विकास और संख्यात्मक कौशल पर केंद्रित रहेगा, जिससे सीखने के परिणाम और भी बेहतर होंगे।

विषय: समावेशी शिक्षा – विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अपनाई गई रणनीतियाँ

प्रस्तुतकर्ता: श्री भुवनेश (पी.आर.टी.)
विद्यालय: पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, बेलगाम कैंट
क्षेत्र: बेंगलुरु

सारांश:
यह प्रस्तुति *समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)* और *ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)* से ग्रस्त एक बच्चे की विकासात्मक प्रगति पर केंद्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रभावी शिक्षण रणनीतियों, सृजनात्मक गतिविधियों और हस्तक्षेपों को उजागर करना है, जो मुख्यधारा की कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सहयोग प्रदान करते हैं।

अवलोकन:
समावेशी शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि सभी बच्चे, उनकी क्षमताएँ चाहे जैसी भी हों, एक ही वातावरण में साथ मिलकर सीखें। इस प्रस्तुति में वर्णित बच्चा संचार, भाषा-प्रसंस्करण और सामाजिक संपर्क में कठिनाइयों का सामना करता है। शिक्षकों और विशेष शिक्षकों के निरंतर सहयोग, नियमित समर्थन और व्यक्तिगत रणनीतियों के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है।

अपनाई गई प्रमुख रणनीतियाँ:

- चरणबद्ध निर्देश देना और उन्हें बार-बार प्रदर्शित करना।
- समझ को बेहतर बनाने के लिए दृश्य सामग्री, संकेतों और सरल भाषा का प्रयोग करना।
- कक्षा के कार्यों के लिए अतिरिक्त समय और व्यक्तिगत सहायता प्रदान करना।
- समूह गतिविधियों और सकारात्मक सुदृढीकरण के माध्यम से भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
- प्रशंसा, पुरस्कार और प्रेरणा के माध्यम से आत्मविश्वास का निर्माण करना।

सृजनात्मक और रोचक गतिविधियाँ:
चित्रकला एवं हस्तकला, संगीत और गति आधारित गतिविधियाँ, दृश्य सामग्रियों के साथ कहानी सुनाना, संवेदी खेल, पहेलियाँ तथा भूमिका-अभिनय जैसी गतिविधियाँ बच्चे के मोटर कौशल, भाषा विकास और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने के लिए उपयोग की गईं।

प्राप्त प्रगति:
अब बच्चा शब्दों और सरल वाक्यों को पहचानने में सक्षम है, बुनियादी गणितीय समस्याएँ हल करता है और सामाजिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से सुधार दिखा रहा है। उसके संचार कौशल में उल्लेखनीय विकास हुआ है, और वह कक्षा की गतिविधियों में अधिक सक्रियता और आत्मविश्वास के साथ भाग ले रहा है।

निष्कर्ष एवं आगे की दिशा:
यह समावेशी दृष्टिकोण अत्यंत सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित करता है। यह संरचित सहयोग, अभिभावकों की निरंतर सहभागिता, और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसरों के महत्व को रेखांकित करता है। आगे भाषा विकास और संख्यात्मक क्रियाओं पर निरंतर ध्यान केंद्रित करके बच्चे के सीखने के परिणामों को और सशक्त बनाया जाएगा।

प्रस्तुतकर्ता का नाम: श्रीमती स्मिता, प्रधानाध्यापक,

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पाय्यानूर

विषय: *समावेशी शिक्षा – प्रत्येक विद्यार्थी के लिए समान अवसरों वाला शिक्षण वातावरण*

परिचय:

हर व्यक्ति भिन्न होता है। शिक्षा तब सबसे सशक्त होती है जब वह विविधता को अपनाती है। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रणाली के अनुरूप ढलने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि शिक्षा प्रणाली को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलना चाहिए।

इस परियोजना का मूल उद्देश्य दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है—यदि कोई फूल नहीं खिलता, तो हमें फूल को नहीं बल्कि उस *पर्यावरण* को सुधारना चाहिए जिसमें वह बढ़ रहा है।

परियोजना के उद्देश्य:

- शिक्षण विधियों का पुनः डिज़ाइन करना ताकि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप हों।
- मूल्यांकन प्रक्रियाओं को इस प्रकार बनाना कि वे सभी विद्यार्थियों के लिए सुलभ, आकर्षक और सहभागिता-आधारित हों, चाहे उनकी क्षमताएँ या सीखने की शैली कैसी भी हो।

किए गए प्रमुख कार्य:

(a) प्रारंभिक पहचान और निदान:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शीघ्र पहचान और मूल्यांकन के लिए प्रोजेक्ट इन्क्लूज़न ऐप और प्रशस्त ऐप का उपयोग किया गया।

(b) सार्वभौमिक अधिगम रूपरेखा (UDL) – पाठ्यक्रम का अनुकूलन एवं व्यवस्थापन:

1. **संसाधन निर्माण:**
   विविध सीखने की शैलियों को ध्यान में रखते हुए *तीन प्रकार के संसाधनों* का विकास किया गया—
   - Engagement (सक्रियता): विद्यार्थियों को प्रेरित करने के विविध तरीके।
   - Representation (प्रस्तुतीकरण): विषयवस्तु को अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत करना।
   - Action and Expression (क्रिया और अभिव्यक्ति): विद्यार्थी अपनी समझ को लेखन, बोलने, प्रस्तुतिकरण या चित्रांकन के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकें।

2. **व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP):**
   विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ तैयार की गईं। यह एक *कानूनी रूप से बाध्यकारी दस्तावेज़* है जो प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी आवश्यकता अनुसार सहयोग प्रदान करता है। (यह कार्य विशेष शिक्षक द्वारा किया गया।)
3. **सहयोगात्मक अभ्यास:**
   सामान्य शिक्षक, विशेष शिक्षक, सहायक स्टाफ, प्रशासक, अभिभावक और समुदाय के बीच सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया गया, ताकि एक समग्र सहयोगी तंत्र स्थापित हो सके।
4. **शिक्षण विधियों में परिवर्तन:**
   सार्वभौमिक अधिगम रूपरेखा (UDL) के सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षण वातावरण को नया स्वरूप दिया गया—
   - शिक्षण की बहुआयामी दृष्टि:
     अब एक ही प्रकार के पाठ्यक्रम पर निर्भरता समाप्त कर, विविध माध्यमों से शिक्षा दी जा रही है—
     - दृश्य शिक्षार्थियों के लिए रंगीन चार्ट और दृश्य प्रदर्शन,
     - श्रव्य शिक्षार्थियों के लिए रोचक कथाएँ और संवाद,
     - क्रियात्मक शिक्षार्थियों के लिए प्रयोगात्मक और हाथों से सीखने की गतिविधियाँ।
       हर अवधारणा तक पहुँचने के अनेक मार्ग विकसित किए गए हैं।
       इन गतिविधियों में *दैनिक निगरानी, खेल-आधारित पद्धति, सहपाठी शिक्षण (peer tutoring), सक्रिय अधिगम, खेल और कला-संयोजित शिक्षण, खिलौना-आधारित अधिगम* आदि शामिल हैं।

विभेदित शिक्षण (Differentiated Instruction - DI):
शिक्षक विशेष शिक्षक के सहयोग से प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार विषयवस्तु, प्रक्रिया और परिणाम को अनुकूलित करते हैं।
जैसे – यदि कोई विद्यार्थी पढ़ने में कठिनाई महसूस करता है, तो उसे वीडियो (दृश्य/श्रव्य माध्यम) के ज़रिए सामग्री दी जाती है, जबकि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उन्नत कार्यों में संलग्न किया जाता है।

सहयोगात्मक अधिगम:
संरचित समूह गतिविधियाँ और *सहपाठी शिक्षण* (Peer Tutoring) को प्रोत्साहित किया गया। इससे न केवल सामाजिक शिक्षार्थियों को सहयोग मिला, बल्कि विद्यार्थियों में *सहानुभूति, सहयोग और परस्पर सम्मान* जैसी सामाजिक-भावनात्मक क्षमताएँ भी विकसित हुईं।

सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology - AT):
शिक्षण वातावरण में ऐसी तकनीकों को एकीकृत किया गया जो सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करती

हैं — जैसे:
Immersive Reader, *Reading Coach*, *Text-to-Speech* और *Speech-to-Text Software*, *Magnifiers* तथा *Digital Resources*।
इन तकनीकों से दृष्टि, पठन या लेखन में कठिनाई वाले विद्यार्थियों को भी अन्य साथियों के समान पाठ्यक्रम तक पहुँच मिलती है।

5. **शिक्षक प्रशिक्षण:**
   शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं ताकि वे *समावेशी शिक्षण, विभेदित शिक्षण* और *सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग* में दक्ष बन सकें।

निष्कर्ष – सशक्तिकरण की संस्कृति की ओर:

इस परियोजना का उद्देश्य केवल सुविधाएँ उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि एक *सशक्तिकरण की संस्कृति* स्थापित करना है।
सार्वभौमिक अधिगम रूपरेखा (UDL) के सिद्धांतों पर आधारित यह पहल यह सुनिश्चित करती है कि –

"विविधता किसी समस्या का समाधान नहीं है जिसे संभालना पड़े, बल्कि यह एक शक्ति है जिसे पहचानकर अपनाना चाहिए।"

विद्यालय: केन्द्रीय विद्यालय, आई.आई.टी. चेन्नई
शिक्षिका: सुश्री वैशाली सोनी
विद्यार्थी: प्रथिक (आयु: 9 वर्ष, कक्षा: III A)
निदान: ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)

उद्देश्य:

इस परियोजना का उद्देश्य *सामाजिक समावेशन*, *संवेदी-अनुकूल (sensory-friendly)* शिक्षण वातावरण* और *कौशल विकास* को बढ़ावा देना था, साथ ही सभी विद्यार्थियों में *सहानुभूति, जागरूकता और आनंददायक अधिगम* की भावना विकसित करना भी इसका प्रमुख लक्ष्य था।

परिचय:

प्रोजेक्ट इन्क्लूज़न के अंतर्गत *प्रथिक* (ASD से ग्रस्त छात्र) के लिए एक सहयोगी और प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण तैयार किया गया। इसमें *संरचित हस्तक्षेप (structured interventions)*, *व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP)* और *सहपाठी सहयोग (peer collaboration)* के माध्यम से सहायता प्रदान की गई। प्रारंभिक चरण में प्रथिक को *व्यवहारिक और संप्रेषण संबंधी चुनौतियाँ* थीं, परंतु समय के साथ उसकी *एकाग्रता, सहभागिता* और *शैक्षणिक गतिविधियों में प्रतिक्रिया* में उल्लेखनीय सुधार देखा गया।

अपनाई गई रणनीतियाँ:

शैक्षणिक:

- दृश्य सहायक सामग्री (Visual Aids) और चित्र आधारित समय-सारिणी (Pictorial Schedules)।
- सरल और स्पष्ट निर्देश।
- सहपाठी-बड्डी प्रणाली (Peer Buddy System) का उपयोग।
- कार्य पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना।

सामाजिक:

- सहपाठियों के साथ सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- छोटे-छोटे उपलब्धियों का उत्सव मनाकर आत्मविश्वास बढ़ाना।

व्यवहारिक:

- सकारात्मक प्रोत्साहन (Positive Reinforcement) का प्रयोग।
- आत्म-नियमन (Self-Regulation) हेतु एक *संवेदी-अनुकूल कोना (Sensory-Friendly Corner)* तैयार किया गया।

संपादित गतिविधियाँ:

- वर्कशीट्स और प्रश्नपत्रों में व्यक्तिगत सहायता।
- सहपाठी समूहों के साथ इंटरएक्टिव सत्र।
- निरंतर प्रेरक प्रतिक्रिया और सकारात्मक प्रशंसा।

देखी गई प्रगति:

- बैठने की सहनशीलता (Sitting Tolerance) और कार्य पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में वृद्धि।
- नेत्र-संपर्क (Eye Contact) और नाम पुकारने पर प्रतिक्रिया में सुधार।
- आत्म-उत्तेजक व्यवहार (Self-Stimulatory Behavior) में कमी।
- नई गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा में वृद्धि।
- निर्धारित अधिगम लक्ष्यों की धीरे-धीरे प्राप्ति।

सिफारिशें:

- IEP (व्यक्तिगत शिक्षण योजना) को जारी रखा जाए और समय-समय पर समीक्षा की जाए।
- सहपाठी आधारित सहयोगात्मक अधिगम (Peer-based Collaborative Learning) को बढ़ावा दिया जाए।
- घर पर अभ्यास और प्रोत्साहन के लिए अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- शिक्षकों के लिए समावेशी कक्षा प्रथाओं (Inclusive Classroom Practices) पर प्रशिक्षण आयोजित किया जाए।

निष्कर्ष:

प्रोजेक्ट इन्क्लूज़न के अंतर्गत *प्रथिक* ने निरंतर और सार्थक प्रगति प्रदर्शित की है।
निरंतर *व्यक्तिगत सहयोग (Individualized Support)*, *समावेशी शिक्षण पद्धति (Inclusive Pedagogy)* और *सहयोगात्मक सहभागिता (Collaborative Engagement)* के माध्यम से प्रथिक शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से मुख्यधारा की कक्षा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ता रहेगा।

“ONE DAY PRESENTATION ON INCLUSIVE EDUCATION , CwSN AND EQUITABLE LEARNING “

Report on the proceedings of THE DAY (06.10.2025)

“ Celebrating Inclusion: A Day of Learning and Development”

Inauguration : The commitment to Inclusive Education, Equitable Learning CwSN and Mental Well-being took center stage as a crucial part of the annual Training and Development Week at the ZIET Mysore.The event officially commenced on October 6, 2025, with an inspiring inauguration. The Training Associate (Physics) and Coordinator Mr Dinesh warmly welcomed all the presenters, highlighting the importance of shared knowledge.

After the self-introduction by the participants, The esteemed Deputy Commissioner and the Director of ZIET Ms. Meenaxi Jain graced the occasion, setting a tone of institutional commitment to these vital themes. In her keynote, she eloquently underscored the imperative for every teacher to evolve beyond a mere instructor—to become both an inspiring facilitator of learning and a compassionate champion of accessibility. This dual, essential role is the very cornerstone of achieving true, heartfelt inclusiveness within every classroom."

A Confluence of Expertise : This specialized one-day presentation brought together a diverse group of dedicated educators from across the feeder regions. Participants representing Ernakulam and Hyderabad were present, eager to exchange best practices and innovative strategies. The session featured outstanding project presentations, demonstrating the practical application of inclusive principles in the field. The presenters included:

1.Mrs. Smita, Head Mistress from PM SHRI KV Payyanur, Ernakulam Region who shared her visionary work.Her project provided a blueprint for grassroots inclusion, proving that equity and excellence can be achieved simultaneously, starting right from the primary classroom.

2.Mr. Bhuvnesh, PRT from PM SHRI KV Belagavi Cantt, Bangalore Region , who showcased impactful primary-level initiatives.

3.Mrs. Pragathi Prajapathi, PRT from PM SHRI KV Waltair, Hyderabad region, who detailed innovative projects aimed at enriching the learning experience for Children with Special Needs (CwSN).

"Following each presentation, a distinguished panel—Director Madam, Special Invitee Madam Jyothi, PGT English from Ernakulam region, and Training Associate Shri Dinesh sir offered thoughtful, probing questions that deepened the discourse and enriched the sessions with their collective expertise."

The day was a powerful testament to the collective efforts being made to ensure that every student is supported, recognized, and empowered to thrive in an environment of equity and well-being.

REPORT

TOPIC: INCLUSIVE EDUCATION – With Focus on Children With Special Needs.
Presented by: Miss PRAGATI PRAJAPATI (PRT)
School: PM SHRI Kendriya Vidyalaya Waltair
Region: Hyderabad

Overview: The initiative at PM SHRI Kendriya Vidyalaya Waltair focuses on inclusive education for Children with Special Needs (CWSN). The project aims to build classrooms where every learner belongs and shines, inspired by the unique life lessons from differently abled children.

Objectives: Identifying and Assessing Needs, Using the PRASHAST app for early screening of special needs or developmental delays, Providing Support and Tailored interventions and referrals for further assessment to promote inclusive practices. Developing Individual Education Plans (IEP), Personalized plans to meet individual student requirements.

Co-curricular Activities and Sports: Finger painting, clay modelling, rangoli, music therapy, yoga, and modified sports (e.g., soft ball cricket, seated volleyball). Students actively participated in regional basketball events.

Recognition: "Inclusive Star of the Month" award to celebrate CWSN efforts. Their talents, and improvements are displayed on the Inclusion Wall.

Therapeutic Activities: Drawing, speech therapy, therapy ball, trampoline, pedal cycle, and eye-hand coordination games.

Individual Support: Teachers provide personalized attention during classes and free periods.

Field Trips: Planned for social interaction, environmental awareness, and practical learning.

Counselling: Sessions to enhance mental health, self-confidence, and resilience.

Sign Language: Taught to improve communication skills.

Impact

These efforts ensure CWSN students learn differently but dream the same, finding their place in the classroom and beyond through a supportive, inclusive environment.

REPORT

TOPIC: INCLUSIVE EDUCATION – Strategies adopted for Children With Special Needs.
Presented by: Mr. Bhuvnesh (PRT)
School: PM SHRI Kendriya Vidyalaya No.2, Belgaum Cantt
Region: Bengaluru

This presentation focuses on inclusive education and the developmental progress of a child with **autism spectrum disorder (ASD)**. The main objective is to highlight effective teaching strategies, creative activities and interventions that support children with special needs in mainstream classrooms.

Overview:
Inclusive education ensures that all children, regardless of ability, learn together in the same environment. The child discussed in the presentation faces challenges in communication, language processing, and social interaction. Through consistent support, collaboration between teachers and special educators, and individualized strategies, noticeable progress is being achieved.

Key Strategies Implemented:

- Giving step-by-step instructions with repeated demonstrations.
- Using visual aids, gestures, and simple language for better understanding.
- Providing extra time and one-on-one support for classroom tasks.
- Encouraging participation through group activities and positive reinforcement.
- Offering praise, rewards, and motivation to build confidence.

Creative and Engaging Activities: Art and craft, music and movement, storytelling with visuals, sensory play, puzzles, and role play are used to develop motor skills, language, social interaction etc.

Progress Achieved:
The child now recognizes words and simple sentences, solves basic math problems, and shows improved social and behavioral responses. Communication skills have developed, and the child participates more actively and confidently in classroom activities.

Conclusion and Way Forward:
The inclusive approach has shown positive results, emphasizing the importance of structured support, continuous collaboration with parents, and opportunities for creative expression. Continued focus on language development and number operations will further enhance learning outcomes.

Name of the Presenter : Mrs SMITA , HM PM SHRI K V PAYYANUR

Everyone is different. Education is strongest when it embraces diversity. Learners should not have to adapt to the system, instead the education system should adapt to the needs of the learners. The fundamental premise of this project is a magnificent shift in perspective: recognizing that if a flower does not bloom, we must fix the environment in which it grows, not the flower itself.

Objectives of the project: To redesign teaching methods in alignment with NEP 2020, and assessments to be accessible and engaging for all learners, regardless of their abilities or learning styles.

Activities undertaken: a) Early Identification and Diagnosis of specially abled children.- Taken support of Project Inclusion App and the Prashast App.

b) Universal Design for Learning (UDL): Curriculum Adaptation and Accommodation:

1.Resource Creation: - involves developing multiple means of Engagement (motivation), Representation (presenting content), and Action and Expression (how students show what they know) to accommodate diverse learning styles and needs. Multiple means of action and expression (e.g writing, speaking, presenting, drawing),

2. Individualized Education Plans (IEPs) for students with special needs, which are legally binding roadmaps for tailored support. (Done by Special Educator)

3. Collaborative Practice: Stressing the necessity of collaboration among general educators, special educators, support staff, administrators, parents, and the community to create a holistic support system.

4. Altering the Pedagogical Environment (Teaching Methods):-To truly empower all, the learning environment is being exquisitely tailored, guided by the principles of Universal Design for Learning (UDL):

Instructional Brilliance: We abandon the single-path lesson for a spectrum of access. Information is presented through vibrant visual displays for the Visual Learner, engaging auditory narratives for the Aural Learner, and compelling, hands-on discoveries for the Kinesthetic Learner. Every concept has multiple gateways. These include daily monitoring , play way method, peer tutoring, active learning , sports &art integrated learning, toy based learning etc..

Differentiated Instruction (DI): Teachers routinely tailor the content, process, and product of learning to meet individual needs in consultation with the special Educator . This ensures a student struggling with reading receives content via video (Visual/Auditory), while a gifted student engages with a complex extension task Collaborative Learning: Integrate structured group activities and peer tutoring. This not only supports Social Learners but also builds crucial social-emotional skills like empathy and mutual respect among all students.

Assistive Technology (AT): The environment integrates technology that acts as an equalizer (e.g., Immersive reader , Reading coach , text-to-speech, speech-to-text software, magnifiers, digital resources). This empowers students with visual, reading, or writing difficulties to access the same curriculum as their peers.

5.Teacher Training: Teachers are updated with the need for ongoing professional development for educators in inclusive pedagogy, differentiated instruction, and using assistive technology.

Conclusion: A Culture of Empowerment :The goal is not just to make accommodations, but to foster a culture of empowerment. By altering the environment based on UDL principles the project ensures that: Diversity is not seen as a problem to be managed, but a strength to be leveraged.

School: Kendriya Vidyalaya IIT Chennai
Teacher: Ms. Vaishali Soni
Student: Prathik (Age: 9, Class III A)
Diagnosis: Autism Spectrum Disorder (ASD)

Objectives

The project aimed to promote social inclusion, sensory-friendly learning, and skill development while fostering empathy, awareness, and joyful learning among all students.

Overview

Project Inclusion sought to create a supportive environment for Prathik, a child with ASD, through structured interventions, individualized education plans (IEP), and peer collaboration. Despite initial behavioral and communication challenges, notable improvement was observed in focus, participation, and response to learning activities.

Strategies Implemented

- Academic: Visual aids, pictorial schedules, simplified instructions, peer-buddy system, and additional task completion time.
- Social: Encouragement of peer interaction, small achievement celebrations to boost confidence.
- Behavioral: Positive reinforcement, creation of a sensory-friendly corner for self-regulation.

Activities Conducted

- Assistance in worksheets and question papers.
- Interactive peer group sessions.
- Positive reinforcement and motivational feedback.

Progress Observed

- Improved sitting tolerance and task focus.
- Better eye contact, name response, and reduction in self-stimulatory behavior.

- Willingness to participate in new activities.
- Gradual achievement of set learning goals.

Recommendations

- Continue IEP with periodic reviews.
- Enhance peer-based collaborative learning.
- Involve parents for home reinforcement.
- Organize teacher training on inclusive classroom practices.

Conclusion

Under Project Inclusion, Prathik has shown steady and meaningful progress. With sustained individualized support, inclusive pedagogy, and collaborative engagement, he can continue to thrive academically, socially, and emotionally in a mainstream classroom

Material Link

1. Embracing diversity- K V PAYYANUR .pptx
2. INCLUSIVE EDUCATION-PM SHRI KV NO2 BELAGAVI CANTT , BENGALURU REGION.pptx
3. INCLUSIVE EDUCATION KV WALTAIR, HYDERABAD REGION.pptx
4. Project Inclusion Report by Vaishali Soni, KVIIT Chennai.pdf